MSS No. 444 (Part 1-5) Subject Yogshastr

Name of MSS Sur Gyan Saroda, Rudaryamal Tantar Vigyan, Para Puja, Anand Lehari, Sandhya

Author Shankaracharya

Period ________ Folios 225

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios ________

Hindi MS. 294.592	
S973	स्वरोदय हिन्दी तथा रुद्रीय मल्ली योग प्रासग भिन्न पत्रक ॥ ल० अ० ६ पं० प्र० पु
444	
	ह० लि०

بمقام [illegible]

[illegible]

श्रीरामचन्द्र पमार

श्रीराम चन्द्र [illegible]

[illegible]

२

यैज्ञोपवीतं परमं पवीत्रं
प्रजापतेर्यदिसहजं परस्तात्
आयुष्यमग्रं प्रतिमंचशुभ्रं
यज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः

3

स० १ 4 श्रीगणेशायनमः॥अथशिवसंबो
धालिख्यते॥वरनंतेगौरीशिवसंवा
दपवनवीजपुस्तककहताहूं॥महं
पिंडब्रह्मंडवषांनतत्वज्ञानसुरभे
दपिंडेसोब्रह्मंडे॥प्रथमतत्वकेर
दोऊसुरनकेविचारशिवजीकह १

तेहैं॥ अथतत्वपंच॥ एकएकतत्वके 5
पंचपंचभेदहैंतेकहूं॥ त्वचा।रोम।ना
डी।अस्थि।मांसयेपृथ्वीकेगुणहैं॥ वी
र्जमूत्ररुधिरलारयेजलकेगुणहैं
क्षुधातृषा।निंद्रा।कांति।आलस।
एतेतनकेगुणहैं॥ धावनपसरन

स० २ उच्चाटन। चलन। संकोचन ए वाय
के गुण हैं॥ सिर अवकाश कंठ अव-
काश। हिरदै अवकाश उदर अवकाश
कटि अवकाश। ये अवकाश के गुण
हैं॥ जाके गुण अंग मन वसते हैं सो-
शिवलोक कहते हैं॥ कटि मैं मध्य का २

कासा उदरमैंजलकावासा । हृदा
मैंतेजकावासा । कंठमैंवायुकावा
सा । सिरमैंआकाशकावासा । पंच
तत्वपंचप्रकारकरिकैजानियै ।
पृथ्वीमधुरस्वाद । जलस्वादफी
का । तेजस्वादचरपरा । वायुस्वाद

स० ४
३

सोंतो आकाशसर्वस्वाद ॥ अथप्र
थपारथ्या ॥ पृथ्वीकास्वाद अंगुल
द्वादसतांही जलसोलहतांही ॥ आ
काशपर्वकामीतथा अंगुलदोय
पृथ्वीकोअधोगति ॥ जलकीसधी
गति ॥ तेजऊरधगतिवायुकोतिर

तेजकाच्यारतांही वायुकाआठतांही २ त्रुटि

श्रीगति॥ आकासकौ सर्वगति॥ पृ 9
थ्वी पीतरंग जल सेतरंग॥ तेज लाल
रंग आकाश स्यामरंग तथा सर्वरंग
जानिये॥ दरपन मैं स्वास मारे पाछै
आकाश दरसै॥ पृथ्वी चौकोर जल अध
नुष॥ तेज त्रिकूंण वायगोल॥ आका

स॰ ४ 10 ससर्वआकार॥ इतिदर्पनलछन॥ प्र
थीतत्वथिरजलचरतेजसम वायुउ
चाटन॥ आकाशसर्वगुण। अथतत्व
विचार॥ रहनासुरमैंअग्निवायये
तत्वअपनोंअधिकतेजकरतेहैं॥ वा
यांसुरमैंजलप्रथीयेतत्वअपनों ७

अधिकतेजकरतहैं॥ सुषमनामैंअ ॥
काशअपतोंअधिकतेजकरतहैं॥
सत्यथ्रंॐ॥यामंत्रसुंकुंनकभैरजो
जापकरैसोसिद्धहोय॥रेचकमेंमा
रनउच्चाटनवशीकरनअस्थंभयु
चिंतवनकरैसोसिद्धहोय॥अग्नि।

म० 12 तत्वदहनौसुरवलैजनवयहनावज
५ पे। ऊँईंगारगनेमः यहमंत्र बारहहजा
रजपैतोशत्रुकोउच्चाटनहोयनि-
श्चैकरि॥मालासर्वधातकी॥बायां
सुरमेंपथीतत्ववलैजनवयहमंत्र-
जपे। ऊँऊँगलनेमः। बारहहजारज-

पैतोमित्रकोउच्चाटनमिटैअस्यं 13
भनहोय॥मात्रारामरजकीवायां
सुरमैंजनजनत्तत्वचैलैनवयह
मंत्रजपे॥ॐगलगनेमःसोलह
हजारजपैवाकोनामचित्तवनक
रिकैतोवसिहोय॥निम्बकरिकैमा

स ५
६

लाग मरनको ॥ जवदेऊ सुरस
मानचलैतवसुषमनाजानियें।
जवत्र्याकाशततचलैतवयहमंत्र
जपै। ॐ ॐ हंसंगनेमः। येकसोत्र्या
ठवारजपैतो मुक्तिहोय निश्चैक
रि। अरसर्वकामनावरजतीहै

वायो सुर चंद्रमाको । दहनो सुरसू 15
रजको । दोऊ सुरन मैं पांच तत्व
हते हैं । रात्रि दिन मैं बार ह वेर सुर
वदलता है । येक सुर पांच घडी च-
लत है एक सुर मैं पांचौ तत्व भुगतै
प्रथम वायु इसमैं अग्नि । तोसरे जल

स०
१६

लचौथैंपृथ्वी।पांचवेंआकाशनें।
सुरज्ञानतौनहींहोयतौनेत्रनकी
कोरतैंआरसीमैंजानियें।तत्वको
ननांकमुषनेत्रमूंदैंअंगुरियान
तैं।पाछैंस्वासमारैनेत्रकीकोरबो
लिदेषै।तत्वपहिचानियें।मंडल

परैसोजानियें॥ तत्वपांचौंपचीस 17
प्रकृतिकाहै॥ सोपूरवकहिआये
है॥ सोईतत्वउत्पत्तिपालनसंघा
रकरतहै॥ करतासोहंसर्वतैंन्या
राहै॥ सुरमैंपंचांगविचारनही
कौंनहीकिसुरहैसोआत्मास्वरु

स० पहे॥ सुरकोतोनविधिप्रवाहहै॥
६ इडा पिंगुला। सुषमना। बांईइडा।
दहनी पिंगुला। रो ऊसुरतनमैंसुष
मनां। इडाजमनारूपहै॥ पिंगुला
गंगारूपहै॥ सुषमनासुरस्तीरूप
है॥ तीनोंमिलैंजवप्रियाजकहीजे ६

नीकौं नाडीन कूं पूरक कुंभककरि 19
जोगे स्वरज्ञानै ॥ पूरक पुष्टकरै कुंभ
कपुष्ट स्थंभन होय ॥ रेचक क्रियां
पापनासै ॥ अरजीवकी रक्षा होय ॥
इडापिंगुलासुखमनांसोधन करै
नाभितैं स्वास उठै ॥ इडाका चंद्रमा

स० ३ 20

रेवता पिंगुला का सूरज देवता । सु

षमना का ब्रह्म देवता । चंद्र सेत वर

न । सूरज क्रस्न वरन । सुषमना रक्त

वरन । इडा सर्व कार्य जिपुष्ट करता ।

पिंगुला सर्व सुष । सुषमना सर्व वि

नाश करता । चंद्र स्त्री रूप है । सूरज

कुरबरूपहै॥ चंद्रभुनकारजधोरज 2।
कोंप्राक्षु॥ सासकेनिरवतांसमेंचं
द्रमाकाराजहै॥ प्रवेशमेंसूरजका
राजहै॥ पूर्वेउत्तरचंद्रमाकाराजहै॥ प
श्चिमदक्षिणसूरजकाराजहै॥ ध्रुव
तैनिश्चैतितीराऊमांगतेहैं॥ तिनके

स०
22
१०

द्वैद्वैभेदहैं।प्रथम॥कहुस्मैसांख्य
वेदोक्तसुरनकेविचारशिवजीक
हतेहैं।सुरतेसोआत्मस्वरूपहै।प्र
कृतोसुरभेदजानैंनहीसोसर्वशा
स्त्रहीनहै।देवताकौशब्दस्वतन्त्र
विवतन्त्रहै।सत्यशब्दनंहीफिरैहर

कीबातजांनेंनहीं। नकालवातजा- 23
नेंनहीं। अपनोकालवचैनहीं। चंद्र
सुरस्वरजसुरतिनकोअभ्यासक-
रोतिनकीगतिऊर्द्धहै। नाभीस्था
नेकुंडलाभुजंगासर्परूपसोसोवैतो
नम्यांपीवैं। दसऊंचोदसनीचो। सो

स ऊरुगलावलौ। अथनाडीकथन
११ 24 इडापिंगलासुषमनांगंधारीगज
जिह्वा।पुष्पअलंबुसासकुहसंखनी
इतिरसवायुनाडी।प्राणअपान
समानउदानव्यानानागकूर्मकि
कलदेवदत्तधनंजय।इतिनाडी

अथ चंद्रमाके सुरमें येता कमकर 25
नों। भूषणावस्त्र रांन विवाह मंदिर
ग्रहप्रवेश ठाकुरसेवा स्वामी। मित्र
देवताको दरसन खेती आरंभ बीज
बोवनो। पुष्टकर्म गावनों बजावनो
नृपकरनो। औषधिवनावनोंनर

स० 26
२२

छोड़बौ। सिंघीसंका जलपान प्रा
स्थ्यनकरनौ। फूलबागवावड़ीकू
पकरन। भाव अलापचारी नित्य म
वनकरनौं। दुखीकूं देषिवेकूं जानौ। प्र
थीमें धनगाडनौं। लोनककुलायवौं
सांतिकरवौ। उपदेशकरनौं सुध

करनौं। कछुकर्म सिषावनौं सधाव 27
नौं। जोगअभ्यास रसायण आदि जो
रमुनकर्म जेते हैं। सो सर्व चंद्र सुरसैं
करनौं। अथ मारनकर्म। शत्रुघात
विवादकरनौं। परकूं उच्चाटनौं। जूवा
षेलनौं। जंत्रमंत्रकाटकचेटककूर

स·
28
२९

वेरी॥ साधनभूतकोनामसकरनौ
साधनदेवताको। कूरकार्जकूंगव
नकरनौ॥ कछुभंगकरनौ लराईफ
गरौकरनौ। विनाशकरनौ विघ्नकौं
उनारिवौ॥ असवारीनपैचढनौ। स्ना
नकरनौ। जुद्धकरनौ मारनौ उच्चाट

नौं। हाथी घोरा रथादि वाहन। भैंस
गऊ दासी दासन कूं मोल लेनौं। सो
धन करनौं। सजनौं। अहीनके विला
श ब्राम भोजन करनौं। सागर नदी
न मैं पैरनौं। इजारो ले कें शत्रुनकौं।
जरूर नाश करनौं। मातान कसजा

म० 30
१४

यवौ। काजकौमुखिवासुनिवौ। और
कुरकमेमर्दकरनौ। इतिम्स्रजकथ
न॥ अथरितुकथन॥ रितुतीनप्रका
रकीहैं विधिसाधारन। येकप्रमआ
धारनकौसाधारनरितु॥ रितुसमैंपु
रषअपनौनासिकाकेअग्रभागपैं।

रहिरामैतौवीरजखलितनहींहोय
इसरीरीति।पहिलैलिंघीकूंथांभेरि
तुकरैपाछैलिंघीछाडैतौवीजेखलित
नहींहोय॥जोजानैतौन्यारोहोयकै
मुत्रथंभनकोजोहोंवीरजकूंथांभेत
वइंद्रीस्थिलहोय।फिरपाछैरितुक

स० 32
१५

7

रैतौवीरजबलितनहींहोय॥अथ
गर्भसाधारनकथन॥जोरितुसमैं।
स्वासासरीरमैंबैंचकैवीजरैपतौवं
ध्यपुत्रवंतीहोय॥बालककूंबुढापा
मैंबलसहायकहोय।स्वासाबाहर
निकसतौवीरजरैपतौगर्भपातजा

य। जोकछुचित्तगर्भरहैतौबालक 33
थोड़ादिनजीवै॥ जोमैथुनकेसमैपु
रषकेसूरजहोयअरुस्त्रीकेचंद्रसु
रहोयतौ। पुत्रकामदेवसमानहोय।
बालकसुनहोय। पुरषकौबायौसुर
होयअरुस्त्रीकौदहनौसुरहोयतौक

स० ३४
२६
सोमोभागवंतीहोय॥ हमेसां सूर्ये
कुरमैंवीजेदेयतोवंसापुत्रवंतीहोय
प्रमसमैंततभेद॥ रूतिसमैतेजत
त्वहोयतोपुत्रहोयपुनिजीवैनहीं।
जीवैतोद्रिसंद्रीहोयभटकैवकूत॥र
तिसमैंपृथ्वीतत्वहोयतोपुत्रजोगी २६

होय॥ जलतत्वमैं धनवंतपुत्रहोय 35
वायतत्वमैं कन्याहोय॥ आकाशत
त्वमैं विध्वंसहोय॥ अथवशीकरन
अस्त्रीजवसोवतीहोय॥ तववाकोनां
योंसुरहोय॥ तवअपनेंरहनैंसुरसुं
पैवैनामिकासोंनामिकामिलायकै

स० 36 तोजीवैजनवतांहोवसिहोय। सुष
१२ मनामेंप्रीतिवरैजाइ॥ अथपुरुष
वसीकरन॥ सोवतसमेंपुरुषअप
नेंचंदसुरमोंअस्त्रीकेसूरजसुर
कुंषचै॥ नासिकासुंनासिकामिला
यकैतोपरअस्त्रीवसिहोय। अरु

आदीअथपैंचंइसुरसंपत्तिकेस्वर 37
जसुरकोंपैचैवारइकोस॥नाशिका
मेंनाशिकाजुरीरहैतोजीवैनवत्तां
हीवसिदोय॥अथगवनविधि।गव
नतीनप्रकारकोहै॥एकतोप्रवेशकूं
इस्वरसिद्धरासनकूं॥तीसरेंनुङ

स० 38 २९

कों। सिद्धसादिकप्रसिद्धहरगवन
सोसोनारमैंराषैतौविघनहरिहो
यसुषपावै। अरुआनघरमैंप्रवेस
स्वरनसुरमैंकोजैतौशुभमनोविचारै
सोहोय॥ इतिसिद्धजात्रा॥ चंद्रसुर
मैंआरपगवायेंधरैतौशुभ॥ सुर

जसुरमैंतीनपगदहनेंग्रागेधरे 39
तोग्रुभ। सर्वकारिजसिद्धहोय। इति
सिद्धजात्रा॥ ग्रथगवनजात्रा। पू
सूरज रवउत्तर[illegible]कावासा। पश्चिमरक्ष
चंद्र णमरुजकावासा॥ पूर्वउत्तर[illegible]सु र हुर ज
रमैंचले॥ पछैवारतिथिलग्नदि

स० 40
१९

सा स्वाद इनिकों विचारिकै चले-
जो सर्व कारज सिद्ध होय। चंद्रसुर
में वायु तेज आकास ये तत्व वरजे
तेहैं॥ सूरज सुर में पृथी जल आका
श ये तत्व वरजे तेहैं॥ इति गवनजा
त्रा॥ अथ गुरु दरसन जात्रा जो को

इराजागुरुपासजायतथाकोइयौ 41
रजाय॥गुरसिष्यकेनामकाअक्षर
मिने॥प्रगहायतो चन्न [illegible] सुरमेगव
नकीजे॥ऊनांहायतोसरजसुरमै
गवनकीजे।जवउनकेपासजाय।
केवैठेसरजसुरफेरिकेवचनक।

स॰ र॰ 42

है वंद्रसुरमैं शिवमौनि है॥ जल

पृथ्वीपुहकरता। अग्नितत्तबीजी

याहाताहै। पृथ्वीततमैं धीरजसौं

कारजहोय॥ जलमैं मितावहोय

आकाशमैं रततहोय तथाकारज

नहीं। वायमैं भंगहोय। वायें आगें

ऊपरचंद्रमाकावामा॥ अथजुद्ध 43
कथन॥ जुद्धसमैं सूरजसुरमैंपह
लैंआपअमलारकरैतोजीते॥ जोआप
नौंचंद्रसुरहोयतोपहलैवैरीको
प्रवाहलीजे॥ पाछैंआयकरैतोजी
तै॥ इरिजुद्धमैंचंद्रसुरमैंगवनक

स्व॰ २२ 44

रे तोजीते। निकट जु छमें सरन सु

में गवनकरे तोजीते॥ सरजसु रमें

उत्तरपूरबसु छकी जु छकरे तोजी

ते॥ बंदसु रमें पच्छिम दक्षिणसु

छकी जु छकरे तोजीते॥ मध्यरण

कथन॥ दहनें सुरकुं चलावे तोरा

हरोगमिटे ॥ बायेंसुरकूंचलावैतो
सीतरोगजाय ॥ प्रातिउठिकेचंद्रसु
रमैंजलपीवैतोमुहासरोगजाय ।
प्रातहीमुषकीलारकूंघसैतोमु-
स्सारोगजाय ॥ प्रातउठिकेदांतसुं
दांतजोरैहोठनकूंमूहैंलारसोंमु-

स० २२ 46

घभरै।वाकैंहोठबोलैदांतमूंसार
षेधरतीपेलारडारैहिनतीनता
थाचार॥वाकेदांतनकरैतौदांत
कठिनहोंय॥प्राकहीवातहूंरिस
नकूंऊपरतीचेंटषेवाकैंनासि
कापेरिहिराखे॥तौतिमरतीराग

जाय।प्रातउठिकैदोऊगोडारिक 41
रावैवैपैरलकावै।सिरऊंचोरा
षेअरुमस्तकनारपीठकमरइन
कूंसुधीकरराषै॥सोऊनेत्रमीडै
दिनइकोसतांईकरैतौजलसंध्य
होय॥नासिकाकेअग्रभागपैदृष्टि

स० राषे हरि के रूप कौं लषै तौ फूला
२३ जाय ॥ कान में सदा रहै राषै रुई
के कान का मैल लगै ॥ सो लहरिन
हथेली में घसै वा सीलारसों तव
आंष में आंजै तो मंदी दृष्टि आछी
होय ॥ अथ आप विधि ॥ रूसप

सूमजैतिथमैंसनिमंगलकों।
प्रातउतिवामैंवंदसुरघटतस
जैसुरवटत। होऊसुरनकीसंधी
मैंप्रापदेयतौशत्रुकौनाशहोय
अथअमावसिवीर॥ शुक्लपक्षके
दूतिथिमैंसोमवारहस्पतिकों।प्रा

म० 50
२५

तउठिवामेंसूर्जउदयपहलै ॥ सूर
जसुरघरतचंद्रसुरवलतरेफसु
रनकोसंधीमेंत्राणिबोर्देयतो
मित्रकोकल्यानहोय ॥ अथसुख
वरनोनिरनैं ॥ सुक्रसोमवृहस्पति
एचंद्रमाकावारहै ॥ शनिमंगल २५

आदित्तएसूरजकावारहैं॥ बुध- 51
सुधमनोकावारहै॥ अथनित्तवि
चार॥ जोचंद्रसुरहोयअरुचंद्रवा
रहोयप्रातउठकोमैंआरपगपह
लैंधरउठेतोसर्वदिनआनंदमैं
है॥ जोसूरजसुरसूर्जकावारलो

स० 52
२५

पतोप्रातउठदेहन्नावगतीनध
रतीमेंधरउठै।तौसर्वदिनम्रानं
दमेंरहै॥दोऊसुरसमांनवहैत
वदोऊपांवधरतीमेंधरउठैतौ
सुनहै॥म्रन्यवार-म्रन्यसुरचलै
तेतोकहूंजायपनेंहोउठैनहीं।म्र

थपखविचार॥शुक्लपखचंद्रमं 53
का। कृसनपखसमरजका॥शुक्लप
खप्रथमतीनदिनचंद्रमाकारा
जहै॥कृस्नपखप्रथमतीनदिन
सूर्यकाराजहै॥शुभकारजशुक्ल
पखचंद्रसुरमैचंद्रवारमैकीजै।।

सं॰ ५४ कन्हकाइनकुम्पनसूरनसु
सं॰ रसर्नवारमैंकीजे॥ प्रथलग्नविचार॥ मेषककर्कतुलमकरएलग्न
मराजकीहै॥ सुराजसुरआवैतोशु
भ॥ चंद्रसुरआवैतोअशुभ॥ दृश्चि
कसिंहवृषकुंभ॥ एलग्नचंद्रमा

कीहै॥ चंद्रमुखलेतोसुभनमरज 55
सुखलेतोअसुभ॥ मीनमिथुन
कन्याधन। एलग्नसुषमनोंकीहै
मातहीमरजउदयमेंमेषलग
नआदिदेकेसाठघडीदिनराति
मैं॥ द्वादसलग्नभुगतैंपांचघडी

स॰ 56 प्रमानसौंतथापंचांगविधिसौं।
२२ अथचंद्रसुरफलं॥प्रातहीवायें
सुरचलैघड़ीच्यारतौअचिंतव
सुभासिहोय॥जोघड़ीआठचलै
तौपरमफलासहोय॥जोराति
दिनचलैतौकुलतैंअधिकसु

बताबै॥ अथ सरजसुर फलं॥ 57
प्रातही तैं सरजसुर चलै घडी
च्यार तौ विनरस मैं कछु वस्तु प्रा
प्ति होय॥ जो घडी आठ चलै तौ स
ज्जन सौं नाश होय॥ जो घडी दस
चलै तौ शरीर मैं कछु कष्ट होय

स·
२८ 58

जोघडीच्यारसचलैतौहितदुषपा
वै॥ जोरातिदिनचलैतोम्रत्युहोय
जोदोयसुरसमांनचलैतोपुत्र
सोभागवंतहोय॥ अहस्वरजमु
रचलैतोदिन८मैंमावरोहोय॥
अथविपरजैजोगकहिजे॥ आ

ठात्तिआठदिनविपरीतसुर। 59
चलैतौताकोफल। पहलैदिन
चिंताहोय॥ दूसरेदिनद्रव्यहानि
होयतीसरेदिनघरछुडावै॥ चौथै
दिनप्यारोदुखपावै॥ पांचवैदिन
अपपतनीदुखपावै॥ छठेदिन

स॰ 60
२९

अपनैंहाथपांवनकूंकोईजीत
लै॥सातवैंदिनरोगआवै॥आठ
वेंदिनमृत्युहोय॥दिनभरके
वांयासुरकूंरोकेदहनासुरकों
चलावै॥रात्रिभरसूरजसुरंरो
केवांयांसुरकूंचलावेतोविप

रीतकोविप्रमिटै॥ अथमल 61
विचार॥ पहलैजोमलवुरीआ
वैतोदुष्टसोविचारहोय॥ चंद्र
माकाअक्षरसमसरजकावि
षम॥ पुरषकाहृकेमुषतैवैरी
कीफौजआवतीसुनकैएछैतो

स०
५० 62

सुन्यघरमैं ग्रस्त जानियें ॥ स्व
सुरमैं सत्य जानियो ॥ चंद्रमा की
दिसामैं चंद्र सुरमैं पूछतो हारि
जानियें ॥ सूरज सुरमैं सूरज की
दिसामैं पूछतो जीत्ति जानियें ॥
जासमैं ह्रतश्मा यप्रस्न करै तो

जाकेअक्षरगिनें॥ सूरजकेअं 63
नो॥ चंद्रकेघरजोदिसादिकस
वैकूंलेयतोनलाहे॥ अक्षसमै
सूरजहोयतोपुत्रहोय॥ चंद्रहो
यतोकंन्याहोय॥ दोऊसुरहोंय
तोजुरवांजानियें। तथादोबाल

स० 64 कया गर्भपात न जाय कै न जीवै ॥ १

३२ यामैं न तत भेद है विचारिले । जो सू

रन सुर होय चंद्रमा की दिसा मैं

थिर होय कै पूछै ॥ तौ पुत्र होय मा

ता नाश होय ॥ चंद्र सुर होय अर

सूरज की दिसा मैं अस्थिर होय ३२

पृछेतौकंन्यालेयमातानाशहो 65
य॥ सुरनकीसंधीमेंप्रश्नकरै
तोग्रनपातहोय॥ अथजात्राप्र
श्न॥ जात्रासमैजतनहोयतो
कारजसिद्धहोय॥ प्रथीतत्तमें
कीरजसौंकारजहोय॥ अग्नित

स॰ 66
३२

तमैंमिनावक्तारन्नहोय॥वायमैं
भंगहोय।आकासमैंकलहहो
य॥अथसुरलछन॥इनैसुर
मैंप्रस्नकरैतौकुशलप्रदेसमैं
जानियें॥सुन्यघरमैंसुषमनो
मैंप्रस्नकरैतोप्रदेसमैंकलह

जानियें ॥ पृथ्वीतत्वमें अस्थान
मेंअस्थीरहैथीरजमें आवेगा
जलतत्वमें औरहूरदेशकूंगया
आवनकीहरकेहाथ ॥ आका
शमेंमृतुजानियें ॥ अथरोगी
काप्रश्न ॥ जोचंद्रसुरमेंप्रश्नक

स: 68 रैतौरोगीअछाहोय॥स्वरजसुर
३३ मैंप्रश्नकरैतौभीमीकांहोयम
मैंथिरवरकाभेदहै॥चंद्रसुर
चलतहोयअरस्वरजकोदिसा
मैंआयकेएकैतौरोगीनहींजी
वे॥स्वरजसुरचलतहोयअरु

चंद्रमाकोदिसामेंआयकेपूछे
तोरोगीनहींजीवै॥ अथसुरफ
ले॥ चैत्रमाससुक्लपक्षकोप
उवाकूंप्रातहीअधोरयमेंचित
एकाग्रकरिकें। पश्चिममुषक
रकैंबैठकेविचारे। जोपडवाकूं

स० ३९ 70 चंदसुरआवैतोशुभ॥सर्वसुख
प्रासिहोयआनंदमैंरहैग्रहनो
नंहीआवैतोतांकोफल॥जोपद
वाकूंचंदसुरनहीआवैतोउचा
टनरहै॥एकवर्षतांईजोदाय
जकूंनहीआवैतोकष्टहोमि

हाययेकवर्षतांई ॥२॥ जोतीजकूं 71
चंदसुरनहीआवैतोगवनजाय
रहै ॥ येकवर्षतांही २ ॥ जोचोथकूं
नहीआवैतोमरणहोयएकवरा-
सतांई ॥३॥ अरुजोपंचमीकूंचंद
सुरनहीआवैतोउसीएजमैआ

स० 72 पकूंपीडाहोयवरषएकमांही
३५ ४॥ जोछठकूंनहीआवेतोराजा
नकोनाशहोयवर्षएकमांही
५॥ अरुजोसातैकूंचंद्रसुरनही
आवेतोराजानमेंकलहहोयव
र्षएकमांही॥ ६॥ अरुजोआठैं

कूंचंद्रसुरनहीआवैतोसर्वए 73
थ्वीमेमरीपडेवर्षएकमांही॥ इ
तिसुरफलं॥ अथसंवतफलं॥ ।
वैत्रसुदीपडवाकूंअरुमेषसंकं
तिजवलगातोंसीघडीमेविचारे।
जबहीसुरमैंकरेविचार॥ वले

स. कौनसोतननिहार॥ जोवायं

३६ सुरमैंप्रथीनतहोयतोअन्नआ

74 दिचिणआदिकप्रथीमेंपराव

जतहोय॥ अन्नसस्तोरहैसर्व

उतपातमिटैएनाप्रजाअस्थि

ररहैं॥ अरुजोचंद्रसुरमैंजलत

तोहोयतौवर्णौवक्रतहोय॥त्रि 75
णअन्नपृथ्वीमेंपैदावक्रतहोय
सर्वसुषहोय॥अरुजोदहनासुर
मेंजलपृथ्वीतत्तचलेतौअर्द्धमों
जांनिये॥अरुजोसर्जसुरमेंअग्नि
ततआवेतौवर्णथोडीहोयअन्न

सं० महैंगाहोयश्रापसमैंराजान
३७ मैंशातरहै॥ अरुजोवायतत्तहै
76 पत्तोपृथ्वीऊपरउत्पातरहै॥ म
पकलेसरैसमैंवऊत्तहोयश्र
नथोडामिपजैनथ्यावायुवाजै
अरुजोचंद्रसुरमैंवायश्रागनतं ३७

नआवैतौअर्द्धकालअर्धपीड़ा 77
मानियें॥ अरुजोवंद्रसुरमैंआ
काशततहोयतौवर्षाबहुतहो
य॥ परंतुअन्नविगडैपीड़ातथा
मरीआवैभयक्लेशबहुतहोय
अरुजोदहनासुरमैंआकाशत

म॰ त्वहोयतोअन्नविगडै॥ अथ
५८ मघकोसोंपाकेवायहुंअरुअ
78 पकलैप्रपीडातथामरीआवे
राजाप्रजादुखपावैं॥ अरुजो
सुखमनामैंआकाशतत्वहोय
तोदुर्भिक्षपडैअरुदेवनहारो

वीनंतीजीवै॥ अरु सर्वप्रथी 79
ऊपरमरी आवै अरु अतंमउ
लपातउहै॥ अथवा आकाश
कीसर्वगतिहै सोसतगुरजानै
अरु जो आपवचावाहै तौ॥ वा
स्यानकूं वाही स्यातसुंन्यकर

स जायअंतकहेंजायपरहे॥ तथा
३९ समाधिमेंचित्तलगावेइतिसं
80 वतफलं॥ अथसुरसाधारन
कर्मरति॥ निद्राआसनगवन
वचनप्रहार॥ इनषटनकीअं
नकुंजीतेसोप्राणायामसाधै

रिनभरकैवंदसुरकूंवरतेवैस 81
रजसुरकूंरोकै॥रात्तिभरस्मरजसु
रकूंवरावैवंदसुरकौंराकैतौस
बेरोगमिटै॥परंतुस्त्रीसंगनक
रै॥अथसुरफेरनतोनम्रकार
है॥उन्नलरफईकीवातीनांकमै

स॰
७०
82

गावेजोवैरकरनाहोयसोवैर
करै॥ग्यानघोराकोबमेंराखै
ताहीकेबलसौंवैठेंतासुरफिरै
जोसुरचलतोहोय॥तिनकेहा
थकूंकूंकमेंदकेग्रनीसोंराखे
हाथनकीप्रबर्भगुरियान्यारी

न्यारौ कहि राखै ॥ भारग मि पैंकु 83
देखै तौ गुरु फिरै जो गुरु चलै तौ -
की करा टेर कै सो वै तौ गुरु फिरौ
कोई दुष्ट होय असाध होय तौ ताकी
संगति न करै ॥ साधु की संगति क
रै भोजन थोड़ा करै मौनि रहै ॥ वा

स॰ बलभायगऊकोमलभायपगलो

कु नाथायश्रोरकछुनभाय॥येकव

85 र्षतांईचिनदृढकरिराषेचंदस्र

जकेसनमुषबेठे॥नोज्ञोगश्रप्पा

समेचित्तलगे॥प्रश्न॥हेभगव

नजोगकोंण॥उत्तर॥सुनोदेवीपा

ईतीजोग-अष्टांगजोग॥ जोगके
आठअंग तेकौंन अंग। जम नेम
आसन। प्राणांयाम। प्रत्याहार धा
रना ध्यानसमाधी। तिनमैंजम।
पंचप्रकारकहियेहैं॥ लय। निंद्रा
विषय। चंचलता। तिनकरिकैं

स० हितर ॥ संतोष अल्प बहु लाभ
४२ संतुष्ट रहै ॥२॥ मौन मिथ्या बोलन
86
के को त्याग ॥ ऋषि मुष बचन सू
र मुष ताला ॥ जब मैं तर घट मे
या उजाला ॥३॥ इंद्रिय निग्रह ॥ श
रीरि विषय को त्याग ॥४॥ दया ४२

म्.तप्राणीनसंनिरवैर॥५॥खान्तु 87
लाविवलारा॥महिंचातुरला।आ
ग्रहत्यागय॥आस्तिकंमोक्षसा
न्नविधैविस्वास७॥आर्जवे-प्रकु
टलाई८।मर्जेवंकोमलताई॥९
क्षमाक्रोधत्यागा॥१०॥नावसुधीर

सं·
४३
88

जलमकरकैरहितअंतहुकर
न॥२१॥अहिंसापरकौपीडानः
करै।ब्रह्मचर्यअष्टामैथुनत्या
गसमरन।कीरतन।श्रवनके
लप्रेक्षणा।गुह्यभाषणासंक
ल्प।अध्यवसाय।क्रियानिर्वृत्ति

इति अष्टा मैथुन रहिता ॥ २३ ॥ स्मृति
जनमके दुःख रोगोके दुष जराके
दुःख इनकों यारि राखे ॥ २४ ॥ धृत्ति
मन प्रान इंद्रिय ॥ रेद इनकूं दुष
प्राप्त भये तैं निरचला रहै ॥ २५ ॥ द
पंचदश भजन ॥ अथ नेम पंचद

सं० शकहियेहै ॥ ऽस्नानजैसोकाल
४४ हायतेसोस्नानकरैउचतकरै
९० जोगसाधनमैं ॥ सोचतैसेंऽस्ना
नसेमहीकालउचत वास्तुसो
च ॥ मरूम्प्रंतरकरनकोसोच
भावसुद्धतेजमकारकेकहिये

करतु।जोगसाधनकरैतबईस 91
रकीसेवाकरै।३॥समसमस्पर्श
लियोवोलै।४॥जपप्रणवेकरै
५।तेमनजठराग्निविषेयुक्तप्र
रलैमै६॥तरपणावंदरसुकरि
जलपानकरै७॥तपइन्द्रियनि।

स० ग्रहकरै ॥ ८ ॥ दानसुमुखकूं
४५ 92 उपदेशदेय ॥ ९ ॥ नत्तिसागण
सेघसहै ॥ १० ॥ रत्ता ॥ सरनमु
खलेनवभोजनकरै ॥ सुर
विनांनहीकरै ॥ ११ ॥ उपाशना
अयुक्तअहारनकरै ॥ १२ ॥ निरा

ग्निजोगकरवेमेंअग्निसंतापै ९३
नहीं॥२३॥स्त्रीवर्जेनजोगकरैनै
अस्त्रीकोसंगनकरै॥२४॥मादिक
वर्जेनभांगादिकअमलनहीषा
य॥२५॥इतिपंचदशनेम॥अथआ
सणकहियेहैं॥चौरासीलाषआ

स० सणकहियेहैं। चौरसीआ
९६ सनहिसारवेऽसन्यासणा। ते
९५
कौनआसन। स्वस्तिक। गोरख
पद्मसुंसर्पेच्यारआसनब्रह्मा
केहैं। नरसिंहगारुडकूर्मन ग
गयेच्यारविष्णुकेआसनहैं। वी

रमयूर । वज्र सिद्ध ये च्यारि रुद्र 95
के आसन हैं ॥ मत्स्यासन शक्ति
का है ॥ पश्चिमतांन शिव को आ
सन है । उत्तांन धनुष सब के आ
सन है ॥ इति षोडश आसन । षो
डश महि च्यारि श्रेष्ठ ॥ सिंह । पद्म

सं० सिद्धभगन्यासमहितेय॥ श्रे
४१ ष्ट। सिद्धपद्मासनमें एक सिद्ध
96 आसन श्रेष्ट है॥ इति आसन॥ ५
अथ प्राणायाम कहिये है॥ उत्त
म मध्यम कनिष्ठ। इति त्रिधा प्रा
णायाम॥ द्वादशमात्रा पूरे चेद्

सुरशक्तिप्रमांणांकुंभकराषे ।। 97
षोडसमात्रारैवेस्वरजसुरके
षे ।। यहकनिहप्रांणांयामक ।।
हिये ।। दुगणीमात्रामध्यम ।। त्रि
गुणीमात्राउत्तम ।। इतिप्रांणां
यांम ।। अथप्रमाणहार ।। एकव

म० तिउठैताहीवृत्तिकोंगहै॥४॥धा
४८ 98 रनापंचभूतकीतथाब्रह्मावि
ष्णुरुद्रशिवसदाशिवकी।६।
धांन।येकयेकविषैवृत्तिरहै॥७
समाधिदोयसविकल्पनिर्विक
ल्प।८॥इतिश्राठअंगजोगकेसंत

गुरुतैंपाइये । इतिजोग । येकवर्ष ११
ताहींसंसारीकरमछोडिकेइनक्रि
यानमैंचित्तकूंलगावे ॥ दुवध्या
नहींकरैमरणमांनैं । अरुजोवास
नाहोयतौपाछैंपाछैंसंसारीकम
करै ॥ दोऊहाथजोरिनाभीतर

सं० धरैचीठनारिसमकरिएबेच्या
४९ रोहिमानमोऊंदेषे॥येकूवर
100 षतोईम्रतिउठिकैचक्रीकरम
कीरतोअगामवुछिलछाबे॥अ
२ पनाकम॥औरफिरतैंमुत्रवं
धरणैमुत्रसमैंवाईअग्रकारो

वंधराखै। वायेंहाथकीअँगु। 101
रियातरजनीमध्यमारोऊअं
ठकोअकेनीचेयुरामेंराखिमी
हथेरीलगावै॥ तवमुत्रवंधहो
य॥ अथसंकोचकरम॥ चित्त
कूंयेकाग्रकरिराखै॥ हढेमंडल

सं० कुंगहिमुषकरनाडीऊर्ध्वस्
५० 102 थेसंको चकर्मकरै सोई चक्रीक
र्मकरै ॥ येतापि छ्यासनवैठे
हृदामंडलमैअग्निकावासा । त
हांअपांनपवनजापवनअग्नि
प्रकाशहोय ॥ मूलद्वारकुंसंको ५०

चनकरऊपरकौंषचैतोअधोमु
षकमलऊरधमेहोय॥ अनीरनेहि
यमांषेंचै॥ अथअनहदनादधुनि
सदामिरवकांनमैंएषेअनहदना
दसुनै॥ मिरचिमैंछेदकरिनागोरि
षेतागाकानैकेलपेटे॥ अथपरक

स० कर्म॥ सहजपालती मार वैठे
५२ तव नासिका मार्ग मैं पवन कहूँ खैं
104 चे॥ तव सर्व देह मैं पवन फिरे स
र्व देह को रोग जाय॥ अथ न्योली
कर्म। सहजपालती मार वैठे दोऊ
पांव दोऊ कंधान ऊपरि धरै। कर्म

रपीठवरोवरकरिराषै॥ नांनीस्या। 105
नमेंपवनकूंचरावै॥ जुक्तिसेव-
लकरिवैठ॥ दोऊ इडापिंगलाना
डीपेषनकरै॥ छैघडीछैजरखपव
नकूंफेरिकेठहरावैतवनांभीश्री
त्तिउपजै॥ अथरागारगीक्रिया॥

स० पूर्वमुषकरवैठद्दृष्टिपसारकैआ
५५ काशकोंदेषै ॥ स्वराजउदयहोय
106 नवतांहीरषैतोनिर्मलहछेहो ॥
य ॥ अथसवासन ॥ दहूनेपगपि
डरीनतांहीवांयेकंधाऊपरठह
रवै ॥ ऐसैहीवायांपगदहनांकं

स० हापकरै॥ ऐसेंहीबांयेंपगरा 107
प्र० हनाकंधाऊपरिधरै॥ मुखसोंह
रकानामलेतारहै॥ अथसुख
आसन॥ दोऊहाथनकोमुठी
बांधेमथीमेंरखैपाछेबांयांअं
गकोअंगुष्टकोंहनीपैराखैस

१०४ धानऊपरदहरावैज्यौंज्यौंसाधै
त्यौंत्यौंसुगमहोय॥ अथचक्री
आसन॥ प्रथीमैंपालतीमारबै
ठेकछुविलंबकरपाछैदाहनौ
पगबांयांकेधानऊपरधरै॥ दो
जहाथनसौंउलटपलटकैअंगु

र्वदेहकाजोरहेअरुसर्वदेहा।
व्यापीरहै॥ ऊंचीजीनसोंहरका
नामलेतारहैताकिशुद्धदेहहोव
इनाक्रियानकूंसाधैतीनलोक
गवनशक्तिहोय॥ ग्यध्यकाल
ज्ञानसाधारणकथन॥ वर्षं

स० मासदिनकुंभोगीसवारेहील
५० षे॥ प्रथवर्षप्रमाणा। एकदिन
110 येकरात्रिभरसुराजसुरचलेतो
वरषयेकप्रावदराजानियै॥१॥
दोयरात्रिदिनसुराजसुरचलेतो
वर्षदोयप्रावदराजानियै॥२॥ती

नरात्रिदिनसूरजसुरचलेतो
तीनवर्षआवरदाजानियें ॥३॥
च्यारिदिनरात्रिसूरजसुरचले
तोवर्षच्यारआवरदाजानिये
४॥ अथमांसप्रमांना ॥ दिननर
सूरजसुरचलेरात्रिनरचंद्रक

स. रचलैतौमासएकआवरदा
१४ जानियें॥२॥दोनुंसुरनिरंतरए
112 तिदिनचलैतौतीनमासआव
रदाजानियें॥३॥पांचरातिदि
नसुरजसुरचलैतौषटमास
आवरदाजानियें॥४॥वीसरा

त्रिदिनस्तरजसुरचलैतोदोष 113
मासख्यावरदाजानिये ॥४॥ स
ताईसरात्रिदिनस्तरजसुरच
लैतोमासयेकख्यावरदाजानि
ये ॥५॥ अठाईसरातिदिनसुरस
सुरचलैतोमासदसख्यावरदा

स०
५८ जानियै॥२३॥उएत्तीसरात्तितिदिन
114 सूरजसुरचलैतौमासपंदरा
मैंश्रावरदाजानियै॥२४॥तीनदि
नएत्तिसूरजसुरचलैतौमांस
यकुश्रावरदाजानियैं॥२५॥जिसी
दिनदोनंसुरचलैंतौछिलाभंग

आवरदाजांनियें॥ अथदिन
प्रमांन॥ मुत्रसिष्ठायेकसीस
मेंछूटेअरुकांनमेंमैलारहै॥
कोबनेअरुअंगुरियांनमेंपीडा
होय॥ तोदिनएकआवरदाजा
नियें॥ २॥ लिलारकीखालसि 115

स॰ मदि जायतो दिन एक आवरस
११६ जानिये ॥ २ ॥ अवनी नाशिका
कोअग्रभाग नहीं देखै तो दिन
तीन आवरदा जानिये ॥ ३ ॥ अप
नी जिह्वा नहीं दीसै तो दिन दोय
आवरदा जानिये ॥ ४ ॥ अपनी औ

रनहींदीसैतौदिनसातआव 117
रदाजानियें॥७॥अनहदनारन
सेंसुनैतौदिनपांचआवरदाजा
नियें॥८॥अपनेंनबरैमल्वचा॰
नसीदीसैतौतुरतहीमरै॥सव
तउत्तमसाधनइतनाहीमैंजा।

स॰ नियं॥ दिनभरवंदूसुरकूंए
५८ केतौसर्वपापदूरिहोय॥ जोको
118
ईश्वरसंतहोयदुराचारीहोयक
हूंविश्वहोय॥ मलीनसुरहोय
इतनेंकूंसुरज्ञानपरोरावत्ता
इयनंही॥ गुरकीभक्तिकरैसि।

कुहोय॥ गुरकौंसरदारताकरि
जानियेंदृढचित्तहोयविस्वासी
होय॥ शांतिसुभावहोयवातस
ल्यकहै॥ दुष्टकीसंगतिनहीं
करैताकूंज्ञानमर्यादादीजै॥ ह
रिॐतत्सत॥ शुभमस्तु

स्व० इतिश्रीशिवगौरीसंवादेसुर
५९ ज्ञानसरोदासम्पूर्णम॥ शुभं
120

121

122

123

वि० 124
१

श्रीगणेशाय नमः ॥ देव्युवाच ॥
श्रुतं देव मया सर्वं रुद्रयामलसं
भवं ॥ त्रिकभेदमशेषेण सारा
त्सारविभागशः ॥ १ ॥ अद्यापि नो
निवृत्तो मे संशयः ॥ परमेश्वर
किंरूपं तत्त्वतो देवशब्दराशि १

कलात्मकं ॥२॥ नादविंदुमयं 125
वापिकिंचंद्रार्द्धनिरोधकं ॥ चक्रा
रूढमनस्थंवाकिंवाशक्तिस्व-
रूपकं ॥३॥ किंनवात्मकभावेन
भैरवंभैरवाकृतौ ॥ त्रिशिरोभेद
भिन्नंवाकिंवाशक्तित्रयात्मकं

वि०
२
126

४॥परापरयोः सकलमपरूप ।
श्चैवपुनः॥परायायदितद्रूपस्या ।
त्परत्वंतद्विरुध्यते॥५॥नहिव
र्णोविभेदेनदेहभेदेनवाभवेत्
परत्वंनिष्कलत्वेनवाभवेत्॥६
प्रसादंकुरुमेनाथनिःशेषंछिं

न्धिसंशयं ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ सा 127
धुसाधुत्वयापृष्टंतंत्रसारमिदं
प्रिये ॥ गूहनीयतमंभद्रे तथा
पिकथयामिते ॥ ७ ॥ यत्किंचित्
सकलंरूपंभैरवस्यप्रकीर्तितं
तदसारतयादेविविज्ञेयंईक्षा

वि०
२ 128

लवत् ॥ ७ ॥ मयास्वप्नोपमंचैव
गंधर्वनगरोपमं ॥ ध्यानार्थमंद
बुद्धीनांक्रियाडम्बरवर्त्तिनाम् ।
८ ॥ केवलंवर्णितंपुंसांविकल्प
निहतात्मनां ॥ तत्वतोननवा ।
त्मासौशब्दराशिर्नभैरवः ॥ न

चापित्रिशिराऐदेवीनचशक्तित्र
यात्मकः॥२०॥नादविन्दुमयो
वापिनचंद्रार्द्धनिरोधकः॥नच
क्रक्रमसंभिन्नोनचशक्तिस्वरू
पकः॥२१॥अप्रबुद्धमतीनांहिए
तावालविभीषिकाः॥मातृमोद

वि॰
४
130

कवत्सर्वं मत्त्व पश्येस्तुदाहृतम्॥
२२॥ दिक्कालकलनातीता देशोद्दे
शाविशेषिणी॥ व्यपदेष्टुमशक्या
सानकथापरमार्थतः॥२३॥
अंतःस्वानुभवानंदाविकल्पोन्मु
क्तगोचरा॥ यावस्थाभरिताका

एभैरवीभैरवात्मनः॥२४॥तद्
पुस्तत्वतोज्ञेयंविमलंविश्वपूर
णाम्॥ एवंविधेपरेतत्वेकःपूज्यः
कश्चतृप्यति॥२५॥एवंविधाभैर
वस्ययावस्थापरिगीयते॥सापरा
पररूपेणपरादेवीप्रकीर्तिता॥२

वि॰ शक्तिशक्तिमतोर्यस्मादभेदः

५ सर्वदास्थितः॥ अतस्तद्धर्मधर्मि

त्वात्पराशक्तिःपरात्मनः॥ नव

न्हेर्दाहिकाशक्तिर्व्यतिरिक्ताविभा

व्यते॥ केवलंज्ञानसत्तायांप्रारंभायं

प्रवेशने॥ २५॥ शक्त्यवस्थाप्रविष्ट

स्यनिर्विभागेनभावना॥ तदासौ 133
शिवरूपीस्याद्देवीमुखमिहोच्य
ते॥ १९ ॥ यथालोकेनदीपस्यकि
रणैर्भास्करस्यवा॥ जायतेदिग्वि
भागादितद्वच्छक्तिःशिवस्यच॥ २०
श्रीदेव्युवाच॥ देवदेवत्रिशूलांक

वि० ६ 134

ककपालकृतभूषणा॥ दिग्देश
कालशून्याचव्यपदेशविवर्जिता।
२१॥ याशक्तिर्भरिताकाराभैरव
स्योपलभ्यते॥ कैरुपायैर्मुखंतस्य
परादेवीकथंभवेत्॥ २२॥ यथा
सम्यगहंवेद्मितथामेब्रूहिभैरव

श्रीभैरउवाच॥ ऊर्द्ध्वप्राणोह्यधो 135
जीवोविसर्गात्मापराचरेत्॥ उत्प
त्तिद्वितयस्थानेभरणाद्भरितस्थि
तिः॥ २३॥ मरुतोन्तर्बहिर्वापिवि
यद्युग्मंविवर्त्तनात्॥ भैरव्याभैरव
स्येत्थंभैरविव्यज्यतेवपुः॥ २४॥ न

श्री

वि॰ व्रजेन्नविशेच्छक्तिर्म्मरु।द्रूपावि
७ 136 काशते॥ निर्व्विकल्पतयामध्येत
याभैरवरूपता॥ २५॥ कुंभितारे
चितावापिपूरितावायदाभवे
त॥ तदंतेशान्तनामासौशक्त्याशां।
तःप्रकाशते॥ २६। आमूलात्किर

॥श्री

लाभालाभसुखदुःखान्स्यस्यनरात्रिकं । 137
चिन्तयेत्ताद्विबद्धांतेशंम्पंतीमै-
रवोदयः ॥२७॥ उत्कृच्छनीन्तद्वि
रूपांप्रतिचक्रंक्रमात्क्रमे ॥ ऊर्द्ध
मुष्टित्रयंयावत्तावदंतेमहोद
यः ॥२८॥ क्रमद्वादशांकंसम्पगृह्य

वि० रूपाद्यरभेदितम्॥ स्थूलसूक्ष्मप
प० 138 रं स्थित्वामुत्कामुक्त्वा ततः शिवः
स्व॥ तथापूर्ण्योऽसुमुर्क्तोतं भक्त्वा
भूमेपसेतुना। निर्विकल्पमनः
कृत्वा सर्वोर्द्धसर्वगोऽहम् मः॥ ३६॥
शिविपमै श्रीत्रह्यैर्म्मंडलंम्म

न्यपंचकं ॥ ध्यायतोमृतरेश्मसे 139
मवेश्चोहृदयेनवेत् ॥ ३१ ॥ ईदृ-
शानकमेलेवपत्रपत्रापिचिन्त
येत् ॥ मूलेकुंडोपरेपात्रेस्वयं
लीनोवरभ्रमः ॥ ३२ ॥ कपालान्त
रमनोन्यस्यत्तिष्ठेन्मीलितलोच

वि०
९
140

नः॥ क्रमेणमनसादार्ढ्योलक्ष्य
येलक्ष्यमुत्तमं॥ ३३॥ मध्यनाडी
मध्यसंस्थविशसूत्राभरूपया।
ध्यातांतर्व्योमयादेव्यातयादेवःप्र
काशते॥ ३४॥ कररुद्धदृगस्त्रेणभ्रू
भेदाद्वाररोधनात्॥ दृष्टेविंदौक

माह्नीनेतन्मध्येपरमास्थितिः ॥ 141
३४॥ धामान्तःसोमसंभूतंसूक्ष्मा
ग्नितिलकाकृतिम् ॥ विन्दुंशिख ।
तेहृदयेलयांतेध्यायतोलयः ॥ ३
अनाहतेपात्रकर्णौभग्नेशब्देस
रिद्रुते ॥ शब्दब्रह्मणिनिष्णातः

वि० परब्रह्माधिगच्छति॥२७॥ ब्रह्म
१० वादिसमुच्चारात्स्तुतोऽस्म्यनघभा।
142
वनात्॥ अन्ययापरयाशक्त्याऽस्
म्यतामेतिभैरवि॥२८॥ यस्यक
स्यापिवर्णस्यपूर्वान्तावनुभावये
त्॥ अन्ययाऽस्म्यम्भ्रतोमौऽन्या

कारःपुमानभवेत्॥३९॥तंआदि 143
वाद्यशब्देपुदीर्घप्रक्रमसंस्थिते
अनन्यचेताःप्रत्यन्तेपरव्योमव
पुर्भवेत्॥४०॥पिंडमंत्रस्यसर्वस्य
स्थूलवर्णक्रमेणतु॥अर्द्धेन्दुवि
न्दुनादान्तेशून्योच्चाराद्भवेच्छिवः

वि० ४१। निजदेहे सर्वदिक्कं युगपद्भा
११ वयेद्वियत्॥ निर्विकल्पमनास्त
144 स्य वियत्सर्वं प्रवर्त्तते॥ ४२। पृष्ठशू
न्यं मूलशून्यं युगपद्भावयेच्च यः।
युगपन्निर्विकल्पत्वान्निर्विकल्पो
दयस्ततः॥ ४३॥ तनूदेशे।

शून्यतेवक्षणमात्रंविभावयेत् 145
निर्विकल्पंनिर्विकल्पोनिर्विक-
ल्पस्वरूपभाक् ॥ ४४ ॥ सर्वंदेहग
तंद्रव्यंवियद्व्याप्तंमृगेक्षणे ॥ विभा
वयेत्ततस्तस्यभावनासास्थिराभ
वेत् ॥ ४५ ॥ देहान्तरेत्वग्विभागंभि

त्तिमात्रं विचिन्तयेत् ॥४६॥ हृद्या
काशे निलीनाक्षः पद्मसंपुटम-
ध्यगः ॥ अनन्यचेताः सुभगे परं सौ
भाग्यमाप्नुयात् ॥४७॥ सर्वतः स्व
शरीरस्य द्वादशान्ते मनोलयात्
दृढबुद्धेर्दृढीभूतं तत्त्वलक्ष्यं प्रव

तेते॥ ६७॥ यथा तत्र यथा तत्र ह

दृश्यान्ते मनः क्षिपेत्॥ प्रतिसंपं

शीतावृत्तैर्वलक्षणं पंचदिनैर्भवेत्॥

६८॥ कालाग्निना कालपुरादुत्थि

तेन स्वकं पुरं॥ लुप्तं विचिन्तयेद

न्ते शांतमाः संप्रजायते॥ ६९॥ एव

147

वि० मेवजगत्सर्वंस्वयंध्यात्वाविका
२२ ल्पतः॥ अनन्तचेतसःपुंसःपुंभा
148 वोपरमोभवेत्॥ ४२॥ स्वदेहेजग
तोवापिसूक्ष्मसूक्ष्मान्तराणिच
तत्वानियानिनिलयंध्यात्वानन्त
व्यज्यतेपरा॥ ४३॥ पीनांचतुर्वेलांचैवध्या

149

त्वा द्वादशगोचरे ॥ प्रविश्य हृदये
ध्यायेन्मुक्तः स्वातंत्र्यमाप्नुयात् ॥ ४
भुवनाध्वादिरूपेण चिन्तयेत्क्र
मशो खिलं ॥ स्थूलसूक्ष्मपरंस्थि
त्या यावदन्ते मनोलयः ॥ ४५ ॥ अ
स्य सर्वस्य विश्वस्य पर्यंतेषु समं

पि० ततः॥ अध्वप्रक्रियपातत्वं ध्यात्वा
२५ 150 शैवं महोदयः॥४५॥ विश्वमेतन्म
हादेवि शून्यभूतं विचिन्तयेत्। त
त्रैव च मनेलीनं ततस्तल्लयभाज
नम्॥४६॥ घटादिभाजने दृष्टिं
भित्तीस्त्यक्त्वा विनिक्षिपेत्॥ तल्ल

यंतत्त्वाणाङ्कृत्वातल्लयातन्मयो 151
भवेत् ॥ ४७ ॥ निर्वृक्षागिरिभित्यादि
देशेदृष्टिंविनिक्षिपेत् ॥ विलीनेमा
नसेभावेक्षीणाहृत्तिःप्रजायते । ४८
उभयोर्भावयोर्ज्ञानेध्यात्वामध्यंस
माश्रयेत् ॥ युगपच्चद्वयंत्यक्ताम

वि॰ 152 २५

ध्येतत्त्वं प्रकाशते ॥ ५९ ॥ भावे त्यक्ते
निरुधा चेन्नैव भावांतरं व्रजेत् । त
दा तन्मयभावेन विकसत्यति भा
वना ॥ ६० ॥ सर्वं देहं चिन्मयं हि जग
द्वा परिभावयेत् ॥ युगपन्निर्विक
ल्पेन मनसा परमोद्भवः ॥

६१॥ वायुद्वयस्यसंघट्टादंतवोवहि 153
रंततः॥ योगीसमत्वविज्ञानमनु
त्तमनभाजनम्॥६२॥ सर्वंजगत्स्व
देहंवास्वानंदभरितंस्मरेत्॥ युग
पत्स्वामृतेनैवपरानंदमयोभवे
त्॥६३॥ कुहकेनप्रयोगेणासघा

वि० वस्रगेक्षणो॥ उदेतिपरमानंदो
२६ येनतत्वंप्रकाशते॥६८॥सर्वस्रो
154 तोनिरोधेनप्राणशक्त्योर्ध्वयाश
नैः॥पिपीलस्पर्शवेलायांप्रथते
परमंसुखं॥६९॥वन्हेर्विषस्यम
ध्येतुचितंसुखमयंक्षिपेत्॥केव

लं वायुपूर्णं वा स्मारानंदेन युज्य 155
ते ॥ ६६ ॥ शक्तिसंगमसंक्षुब्धश
क्त्यावेशावसानिकं । यत्सुखं ब्रह्म
तत्त्वस्य तत्सुखं स्वाख्यमुच्यते ॥ ६७
शक्त्याभावेपि देवेशि भवेदानन्द
संप्लवः ॥ लेहनामन्थनाकोटैः ।

वि० २१
156

स्त्रीसुखस्यभरात्स्मृतेः॥६॥ध्या
नेदेमहतिप्राप्तेदृष्टेवाबांधवेचि
रात्॥आनंदमुद्गतंध्यात्वातल्ल
यस्तमनाभवेत्॥जग्धिपानकृ
तोल्लासरसानंदविजृम्भणात्
भावयेद्भरितावस्थांमहानंदस्ततो

नवेत् ॥ ७० ॥ गीतादिविषयास्वा 157
द्समासेक्ष्यैकतान्मनः ॥ योगि
नस्तन्मयत्वेनरूढैस्तदात्मता ।
७१ ॥ यत्रयत्रमनस्तुष्टिर्मनस्त
त्रैवधारयेत् ॥ तत्रतत्रपरानंद
स्वरूपंसंप्रकाशते ॥ ७२ ॥ अनाग

वि० ताथांनिद्रायां प्रनष्टेवाग्गोच
१८ रे॥सावस्थामनसाप्राप्तापरादे
158 वीप्रकाशते॥७३॥करंकिंपाकौ
धनयामेरवालेलिहानया॥खे
चर्य्यांट्टकीलेचपराव्याप्तिप्र
काशते॥७४॥मृदासनेस्फिचैकेनह

स्तथाहंनिराश्रयं॥विधायतत्प्र 159
संगेनपरापूर्णामतिर्भवेत्॥७५॥
उपविश्यासनेसम्यग्बाहूकृत्वा
वकुंचितौ॥कक्षयोग्निमनःकु
र्वन्क्रममायातितत्क्षयात्॥७६॥
स्थूलरूपस्यभावस्यास्तक्षांदृष्टिं

वि०
१९
160

निपातयेत॥अविरलंनिराधारे
मनःकृत्वाशिवंव्रजेत॥७७॥मध्य
जिह्वांस्फारितास्यमध्येनिक्षिप्य
चेतनां॥होच्चारंमनसाकुर्वंततः
शान्तेप्रलीयते॥७८॥आसनेश
यनेस्थित्वानिराधारंविभावये

त्॥ स्वदेहंमनसिक्षिणेक्षणा- 161
त्क्षीणाशयोभवेत्॥ ७९ ॥ वलास
नेस्थितस्याथशनैर्वादेहचाल
नात्॥ प्रशान्तेमानसेभावेदेवी
दिव्यौघमाप्नुयात्॥ ८० ॥ लीनंमू
र्ध्निवियत्सर्वंभैरवत्वेनभावये

वि० त॥ तत्सर्वंभैरवाकारं तेजस्तत्वं
२९० समाविशेत् ॥ ८२॥ किंचिज्ज्ञात्वा।
162 द्वैतदापि वाह्यालोकस्तमःपुनः
विश्वादिभैरवं रूपं ध्यात्वानंतप्र
काशवत् ॥ ८३॥ एवमेवं दुर्निशा
यां कृष्णपक्षागमे चिरात् ॥ तैमि

रूं भावयेद्रूपं भैरवं रूपमेष्यति ॥ 163

८३ ॥ एवमेव निमील्यादौ नेत्रं कृष्ण

मग्रतः ॥ प्रसार्य भैरवं रूपं भा

वयेत्तन्मयो भवेत् ॥ ८४ ॥ यस्य क

स्येंद्रियस्यापि व्याघाताच्च निरोध

तः ॥ प्रविष्टस्याद्वये शून्ये तत्रैवा

वि० त्माप्रकाशते॥८५। अविन्दुमविं
२२ सर्गं च अकारं जपतो महान्॥ उ
164 देति देवि सहसा ज्ञानौघः परमे-
श्वरः॥ सविसर्गस्य वर्णस्य विसर्गो
ते चितिं कुरु॥ निराधारेण चिते
न स्पर्शो ब्रह्म सनातनम्॥८६

व्योमाकारंस्वमात्मानंध्यायेद्दिग्
भिरनावृतं॥निराश्रयाचितिःश
क्तिःस्वरूपंदर्शयेत्तदा॥७७॥किं
चिदंगंविभिद्यादौतीक्ष्णसूच्या
दिनाततः॥तत्रैवचेतनायुक्ताभै
रविनिर्मलागतिः॥७८॥चित्ता

वि०
२२
166

घन्तक्कृतिर्नोस्तिममांतर्भावये
द्दिति॥ विकल्पानामभावेपिवि-
कल्पैरुक्रितोभवेत्॥ ९०॥ मा
याविमोहिनीनामकलायाकल
नंस्थितं॥ इत्यादिधर्म्मतत्वानांक
लयन्नाप्रयमभवेत्॥ ९१॥ ऊगि

तीत्थंसमुत्पन्नामवलोक्यशमंन 167
येत्॥ यतएवसमुद्भूताततस्तत्वै
वलीयते॥ ९२। यदाममेच्छानोत्प
न्नाज्ञानंचकस्तदास्मिवै॥ तत्व
तोहंतथाभूतस्तल्लीनस्तन्मना
भवेत्॥ ९३॥ इच्छायामथयज्ञाने

वि०	वजातेचित्तंनिवेशयेत्॥ आत्मा-
स्कं०	नुश्चानन्यचेतास्ततस्त्वात्मद
168	र्शनं॥ ४८॥ निर्निमित्तंभवेत्ज्ञा
नंनिराधारंब्रह्मात्मकं॥ तत्वतः
कस्यचिन्नैतदेवंभावीशिवःप्रि
ये॥ ४९॥ चिद्धर्म्माःसर्वधर्मेषुवि

मेषु विशेषो नास्ति कुत्रचित्॥ अ 169
तश्च तन्मयं सर्वं भावयेद्भावजि
ज्जनः॥ २६॥ कामक्रोधलोभमोह
मदमात्सर्य्यगोचरे॥ वुद्धिं निस्ति
मितां कृत्वा ततत्वमवशिष्यते॥
२७॥ इंद्रजालमयं विश्वं न्यस्तं वा

विं०
२५
170

चित्रकर्म्मेकृत॥ मनसाध्यायत
स्सर्वपश्यतश्च सुखोद्गमः॥९८
नचित्तंनिक्षिपेदुःखेनसुखेवाप
रिक्षिपेत॥ मेरविद्यायतांमध्येकिं
तत्वममगिव्यते॥९९॥ विहाय
निजदेहस्थांसर्वेमस्मीतिभाव

येत् ॥ दृष्टेनमनसादृष्ट्वाननेत्ति 171

ण्यासुखीभवेत् ॥ १०० ॥ घटादौय

चविज्ञानमिच्छाद्यंवाममांतरे । नै

वसर्वगतंजातंभावयन्नितिसर्व

गः ॥ १०१ ॥ ग्राह्यग्राहकसंवित्तिःसा

मान्यासर्वदेहिनां । योगिनांतुवि

वि०

२५

172

शेषोयं संबंधे सावधानता ॥ ४ ॥ स्व
वदन्यशरीरेपि संवित्तिमनुभाव
येत् ॥ अपेक्षां स्वशरीरस्य त्यक्त्वा
व्यापी दिनैर्भवेत् ॥ ५ ॥ निराधारं म
नः कृत्वा विकल्पान्न विकल्पये
त् ॥ तदात्मा परमात्मत्वाद्भैरवो

मृगलोचने ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्वक 173
र्त्ता च व्यापकः परमेश्वरः ॥ स एवा
हं शिवधर्म्मो इति दालोड्वेच्छि
वः ॥ ५ ॥ जलस्य वोर्म्मयो वन्हेर्ज्वा
ला भंगपः प्रभा रवेः ॥ मम एवं भैरव
स्य ता विश्व भंगपो विभेदिताः ॥ ६ ॥

वि० भ्रांत्वा भ्रांत्वा शरीराणि त्वरितं जे

रद्द विपातनात् ॥ क्षोभशक्तिविरामे

174 णापरा संजायते दृमण ॥ ७ ॥ ग्याधा

रेष्वथवा शक्या ध्मानान्निवृत्तलये

नवा ॥ जातशक्तिसमावेशक्षो

भांते भैरवं वपुः ॥ ० ॥ संप्रदायमि रद्द

नड्रेष्टलुसम्यग्वदाम्यहं॥ कैवल्यं 175
जायतेसद्योनेत्रयोःस्तम्भमान-
योः॥९॥कूपादिकेमहागर्त्तेस्थि
त्वोपरिनिरीक्षणात्॥ अविकल्प
मतेःसम्यक्सद्यश्चित्तलयस्फुटं
१०॥ यत्रयत्रमनोयातिवाह्येवा-

वि० म्यंतरेभ्रिये॥ तत्रतत्रशिवावस्था
२७ व्यापकत्वात्क्वयास्यति॥२८॥ यत्रय
176
त्राक्षमार्गेण चैनन्संव्यज्यतेविभोः
तस्यतन्मात्रधर्म्मित्वाच्छिलयाङ्ग
रितात्मना॥२९॥ स्फुताद्यन्तेभयेशो
केगह्वरेवारणकुते॥ कुतूहलेषु

धायन्तोब्रह्मसत्तासमीपमा॥२३॥
वस्तुपुस्मर्य्यमाणोपुरष्टेदेशेमन
स्त्यजेत्॥स्वशरीरंनिराधारंततः
प्रसरति:प्रभुः॥२४॥क्वचिद्वस्तुनि
विन्यस्यशनैर्दृष्टिंनिवर्त्तयेत्॥तन्ज्ञा
नंचित्तसहितंदेविशून्यालयोभवेत्

वि० मत्तुद्देकाद्विरक्तस्य यादृशी जाय
२८ ते मतिः॥ सा शक्तिः शंकरी नित्यं भा
178 वयेत्तां ततः शिवः॥ १६॥ वस्त्वंतरे वि
द्यमाने शनैर्वस्तुषु शून्यता॥ तामे
व मनसा ध्यात्वा विदितो पि प्रशा
म्यति॥ १७॥ किंचिज्ज्ञैर्या स्मृता शु

ङ्घिःस्याऽस्पृङ्घिःश्रंनुदर्शनेनस्पृ- 179
चिर्यस्पृचिस्तस्मान्निर्विकल्पःसु
खीभवेत् ॥२८॥ सर्वत्रभैरवोभावः
सामान्येष्वपिगोचरः॥ नचतद्व्य
तिरेकेणपरोस्तीत्यद्वयागतिः॥
२९॥ समःशत्रौचमित्रेचसमोमा

वि०
२९
180

नावमानयोः॥ ब्रह्मणःपरिपूर्णत्वा
दितिज्ञात्वासुखीभवेत्॥२८॥ नद्वे
षंभावयेत्क्वापिनरागंभावयेत्क्व
चित्॥ रागद्वेषविनिर्मुक्तोमध्येब्र
ह्मप्रसर्पति॥२९॥ यद्वेद्यंयद्ग्रा
ह्यंयच्छून्यंयदभावगं॥ तत्सर्वंभैर

वंभाव्यंतदंतेवोधसंभवः॥२५॥नि 181
त्येनिराश्रयेशून्येव्यापकेकलनो-
ज्झिते॥वाह्याकाशेमनःकृत्वानि
राकाशेसमाविसेत्॥२६॥यत्रयत्र
मनोयातितत्रतेनैवतत्क्षणात्॥प
रित्यज्यानवस्थित्यानिस्तरंगस्त-

वि० तोभवेत्॥२४॥भियासर्वैरवयतिस
३० र्वगोव्यापकोऽखिले॥इतिभैरवशब्द
182 स्यसततोच्चारणाच्छिवः॥२५।अहं
ममेत्यादिप्रतिपत्तिप्रसंगतः नि
राधारेमनोयातितध्यानप्रेरणाच्छ
मी॥२६॥नित्योविभुर्निराधारोव्या

पकस्माखिलाधिपः॥ शश्वान्मति
ह्तांध्यायन्नकृतार्थोनुरूपतः॥२७॥
अतत्वमिंद्रजालाभमिदंसर्वंमव
स्थितं॥ किंतत्वमिंद्रजालस्यइति
दार्ढ्याक्क्रमंव्रजेत्॥२८॥ आत्मनोनि
र्विकारस्यकर्त्तानंक्कचवा॥ क्रिया

वि०
३२
184

ज्ञानापन्नावह्निर्भीवाग्रतः शून्यमि
दं जगत् ॥ ३८ ॥ नमेवन्धोनमेमोक्षो
वालस्यैवविभीषिकाः ॥ प्रतिविम्बमि
दं वुद्धेर्जलेष्विवविवस्वतः ॥ ३९ ॥ इ
न्द्रियद्वारकं सर्वं सुखदुःखादिसंग
मं ॥ इतीन्द्रियाणि संत्यज्य सुस्थस्वा

त्मनिवर्त्तते ॥३५॥ ज्ञानं प्रकाशकं
सर्वमात्मा चैव प्रकाशकः ॥ एवमेक
स्वभावत्वाज्ज्ञानं ज्ञेयं विभाव्यते ॥३
मानसं चेतनाशक्तिरात्मा चेति च
तुष्टयं ॥ यदाश्रियेय परिक्षीणं तदात
द्वैरवं वपुः ॥३६॥ निस्तरंगोपदेश्ण

185

वि० नांशतमुक्तंसमासतः॥द्वादशाध्य
३२ धिकंदेवियज्ज्ञात्वाज्ञानविज्ञनः
186
३४॥अत्रचैकतमेयुक्तोजायतेमेर
वस्वयं॥वाचाकरोतिकर्म्माणिसा
णमादिगुणान्वितः॥३५॥योगिनी
नांप्रियोदेविसर्वेमेलापकाधिपः

जीवन्नपि च मुक्तोसौ कुर्वन्नपि चवे 187
ष्टितम् ॥ ३६ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ इदं
यदि वपुर्देव परापापरमेश्वरः ॥
एवमुक्तव्यवस्थायां जप्यते कोज
पश्च कः ॥ ३७ ध्यायते को महादेव
पूज्यते कश्च तृप्यति । हूयते कस्य

वि०
३९
188

वाहोमोयागःकस्यचकिकथं । ३८
श्रीभैरउवाच ॥ येषात्रप्रक्रियाव ।
स्यास्थूलेत्येवमगेवतो ॥ मयोम्
यःपरेभावेभावनाभांव्यतेहिया
३९ ॥ जपःस्तोत्रस्वयंनादेमंत्रा
त्माजपम्पईदृशः ॥ ध्यानंयानिष्क

स्तावुद्धिर्निराकारा निराश्रया॥न 189
तु ध्यानं शरीरादिमुखहस्तादिक
ल्पना॥४०॥पूजानामनपुष्पाद्यै
यामतिः क्रियते दृढा॥निर्विकल्पे
परे व्योम्नि सा पूजा ह्यचिराल्लयः।
४१॥महाशून्यालये वन्हौ भूतात्त

वि० विषयादिकं। दृश्यते मनसा सार्द्धं
३५ सहोमन्ध्यैतनात्मचा॥४२॥यागोत्र
१९० परमेष्ठानिजुष्टिरानंदलक्षणा
क्षयणात्सर्वेयासानांत्राणात्सर्वे
स्पपावेति॥४३॥रुद्रशक्तिसमा
वेशस्तत्स्येत्रंभावनापरा॥अन्य

थातस्यतत्त्वस्यकापूजाकश्चत 191
प्यति॥ यैरेवपूज्यतेदेवैस्तर्पतेव ।
परात्परः॥ यश्चैवपूजकस्सर्वस ।
रावैकःक्कपूजनम्॥ ४४॥ व्रजेत्मा
णोविशेज्जीवश्छ्याकुटिलाकृ
तिः॥ दीर्घात्मासा महादेवीपरंते

वि० त्र्यंपरात्परा॥४५॥ अस्मानुचरन
३५ स्तिष्ठेन्महानंदमवेक्ष्यते॥ तथादे
192 व्यासमाविष्टः परं भैरवमाप्नुया
त्॥४६॥ षट्शतानि दिवारात्रौ
सहस्राण्येकविंशतिः॥ जपो देव्याः
समुद्दिष्टः प्राणस्यांते सुदुर्लभः

४७॥इतितत्कथितंदेविपरमामृ 193
तमुत्तमं॥एतच्चैनैवकस्यापिप्र
काश्यंतुकदाचन॥परशिष्येखल
लेक्रूरेऽभक्तेगुरुपादयो॥४८
निर्विकल्पमतीनांतुवीराणामुन्न
तात्मनां॥भक्तानांगुरुवर्गस्यदा

वि० तव्यंनिर्विशंकया॥४९॥ग्रामो

उद्धि राज्यंपुरंदेशः पुत्रदाराकुटुम्बक

194 म्॥सर्वमेतत्परित्यज्यग्रास्यमेत

न्मृगेक्षणे॥५०॥किमेभिरस्थिरै

र्देवि स्थिरंपरमिदंधनम्॥प्राणा

न्अपिप्रदातव्यानदेयंपरमाद्भ

तम्॥४१॥श्रीदेव्युवाच॥देवदेव 195
महादेवपरितुष्टास्मिशंकर॥रु
द्रयामलतंत्रस्यसारमद्यावधारि
तम्॥४२॥सर्वशक्तिप्रभेदानांहृ
दयंज्ञातमधच॥इत्युक्तानंदिता
देवीकंठलग्नाशिवस्यतु॥४३॥

वि० इति श्रीरुद्रयामलतंत्रेविज्ञान
३७ भैरवनामयोगशास्त्रसम्पूर्णो॥
196 सम्वत्॥१९७५॥आषाढ कृ
ष्णा॥२॥ ह॰गोविन्दसिंहवं॰

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ श्रीश
ङ्कराचार्यस्य भणितिः॥ आन
न्दे सच्चिदानन्दे निर्विकल्पै
करूपिणि। स्थिते द्वितीयाऽ
भावेवै कथम्पूजाविधीयते॥
१॥ पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वा

१

१९४ धारस्य चासनम् ।स्वच्छस्य पाद्य
मर्घ्यञ्च शुद्धस्याचमनं कुतः ॥२॥
निर्मलस्य कुतः स्नानं वस्त्रं विश्वो
दरस्य च । निरालम्बस्योपवीतं
रम्यस्याभरणं कुतः ॥३॥ निर्लेप
स्य कुतो गन्धः पुष्पं निर्वासनस्य

च।।निर्गन्धस्य कुतो धूपः स्वप्रकाश 199
स्य दीपिका।।४।। नित्यतृप्तस्य नैवेद्यं
निष्कामस्य फलं कुतः। ताम्बूलञ्च
विभोः कुत्र नित्यानन्दस्य दक्षिणा
।।५।। प्रदक्षिणामनन्तस्य ह्यद्वितो
यस्य का नतिः। अन्तर्बहिश्च पूर्ण

2

200

स्यकथमनुघासनंभवेत्॥६॥इयमे
वपरापूजाविष्णोः सत्यस्वरूपिणः॥
देहोदेवालयःप्रोक्तोजीवोदेवस्सदा
शिवः॥ ७॥त्यजेदज्ञाननिर्माल्यंसो
ऽहंभावेनभावयेत्।तुभ्यंमह्यम
नन्ताय मह्यंतुभ्यंशिवात्मने।८॥

सर्वावस्थासु सर्वदा॥ एक बुद्धिस्तु देवे यो विधेया ब्रह्मवित्तमैः

नमो देवाधिदेवाय पराय परमात्म
ने । योगी देहाभिमानी स्याद्भोगी कर्म
णि तत्परः ॥ ८ ॥ ज्ञानी मोक्षाभिमान्ये
व तत्त्वज्ञे नाभिमानिता ॥ ९ ॥ किं करोमि
क गच्छामि किं गृह्णामि त्यजामि कि
म् ॥ १० ॥ आत्मनापूरितं सर्व्वं महाक

३.
202 स्यात्स्वँभुनायया॥ ११॥ इति श्रीमच्छ
ङ्कराचार्य्यविरचिता परा पूजा समा
प्ता॥ ॥ श्रीरस्तु शुभमस्तु॥ इति

श्रीगणेशायनमः पुरैपौरा। 203
न्पश्यन्नरङ्गवतिनामाकृति
मयान्तवेषान्स्वर्णालंकर
णाकलितांश्चित्रसहस्रान।

204

स्ववेसाद्वीद्रहेत्यापिचकल
१ येत्तैःमदरमवमुद्रिनेव्या ।
मोदे[illegible]चतिगुरुदीव्रावततत
माः १ वनेवृद्धान्पश्यन्दल

205

फलभरानम्रविशिखान्धन
छायाछन्नान्वकुलकुलछ
जैह्विजगणान् भ[illegible]धसे।
राज्ञावववनितलतलैकशा।

206

यनोमुनि २ कदाचित्यासादे
१ क्वचिदपिचसौधेषुधुनिनांक
२ दाकालेशैलेक्वचिदपिचकूले
षुसरितां कुटीरेदांतानांमुनि

207

ज्ञनवराग्णामपिवसतमुनिः३।
क्वचिद्बालैःसार्द्धंकरतलजता
लैःसहसितैः क्वचित्तारुण्या
लंकृततरनरीभिःसहरमन।

208

क्वचिद्वृद्धैश्चिताकुलितहृद
१ यैश्चापि विलपनश्रुतिः ॥ क
२ दाचिद्विद्वद्भिर्विविदिषुभि
रत्यंतविरतैः कदाचित्का

209

ख्यालंकृतिरसरसालैः कविव
रैः कदाचित्सन्तर्कैः रनुमिति
परेस्ताकिंकवरैर्मुनि- ५ का।
दाख्यानाभासैः क्वचिदपिसप

210

यांविकसितैः स्त्रगं [illegible]ैः सत्सुहै[illegible]

१ क्वाचिदपिदलैर्वबिमलैः प्र

४ कुर्वन्देवस्यप्रमुदितमनाः संत

तिपरोभुजि-६ शिवायाः शंभो

मिक्षचिदपिचविषोगारपिकदा।
मणाध्यनूर्स्मापिप्रकटतपन।
स्या[illegible]कन[illegible]नवैनामाति
नमप्रादिवा[illegible]दमा[illegible]मेलोमुनि-७
नै

212

कदागंगांभोभिः क्वचिदपिच।
१ कूपोत्थितजलैः क्वचित्कासा
रोत्थैः क्वचिदपि सद्रूपोत्थैश्चशि
शिरैः भजत्स्नानंभूम्नावापि

213

दपिचकर्पूरन्निभयामुनि ८।

कदाचिज्ञाग्रत्याविषयकरणै

:संव्यवहरन कदाचित्स्वम।

त्यानपिचविषयानेवचभज

न कदाचित्सोप्युमंस्तुत्वमनुभव
१ न्नेवसततं ६ कदाप्याश्रवांस
६ क्वचिँचद्दिव्यांबरधरःकचित्यंचा ढंपि
स्यांयत्वचमप्रियदधानः कादित

215

ले॰। मनस्वीनिः शोकः स्वजनह।
दयानंदजनकोमुनि॰ १॰ कदा।
चित्संतवस्यः क्वचिदपिरजोवृत्ति
श्रुगतस्तमोवृत्तिर्वापिवितयत।

216

द्रितक्कापिचपुनः कदाचित्संसा
रीश्रुतिपथविद्वारीकचिदके मुनि
॥ कदाचित्मौनस्थक्वचिदपि
चवाद्यादनिरतः कदाचित्स्वानं

217

दंद्वसितभरसंत्यक्तवचनः। का
दाचिल्लोकानांव्यवहृतिसमा
लोकनपरोमुनि॰ १२ कदाचि
च्छ्रत्नौनाविकचममुखपद्मेषुक

218

बलान त्रिपन्नामां कापि स्वयम

पि च गृह्णन स्वमुखतः नदाहै।

तं रूपं निजपरविद्वीनं प्रगटयन्।

मुनि-१३ कचिच्छैवैः सार्द्धका।

त्विदपि च शाखैः सहवसन क्वचि
द्विषोगर्भैः क्वचिदपि च सौरैः सह
रमत कदाग्गाणपत्यैर्गतसक
लभेदहृद्यतया मुनिः २४ निराका

220

रंकापिकश्चिदपिचकाकारममा
लेनिजंशैवंरूपं विविधविधिभे
देनवद्धधा कदाश्चर्यंपरमंकि
मिदमितिहृष्यन्नपिवशमुनि

221

१५ कदाहं तं प्रपश्यन्नखिलमपि
सत्यं शिववासदमहावाक्यार्थो ना
मंत्रपाति[illegible]स्नमस्याम्भव शांतः। गतद्वै
तामाज्ञः शिव शिवा शिवेत्येत वि

222

लपनमुक्ति॰ १६ प्रांसमभावस्य

परमशिवसस्य गुरुकृपालब्धा

ं मामाबाण्यामदृजमुंलब्धोपि

मनुदिनं मुंऊमे [illegible]

223

निस्त्रूकृतिश्चेन्नरवरः महायोगी ।
त्यागीकविरितिवंदंतीहकवयः १०
इत्यानंदलहरीसमाप्तम् ॥फाग
णबदीश्रविवारसंवत् १९५२॥

आत्मा नदी संयम पुण्यतीर्था सत्योद
का शील तटा दयो[illegible]र्मिः॥ तत्राभि
षेकं कुरु पाण्डु पुत्र न वारिणा शुद्ध्य
ति चान्तरात्मा॥ १॥ मृता मोहमयी मा
ता जातो ज्ञानमयः सुतः॥ सूतकद्वय
संप्राप्तौ कथं सन्ध्यामुपास्महे॥ २॥
श्रीरामनारायण दीनबन्धो कृपाविधेयाम
द्य पापसिन्धो। निरर्थकम् जन्म गतं मदीयं
न चिन्तितं ते चरणारविन्दम्॥ ३॥

225

[illegible]

[illegible] ۱۹۵۶

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]